

**चरणामृत** पुं. (तत्.) 1. वह जल जिसमें किसी देवभूमि या पूज्य पुरुष के चरण धोए गए हों, पादोदक मुहा. चरणामृत लेना- किसी महात्मा या बड़े का चरण धोकर पीना 2. दूध, दही, घी, शक्कर और शहद का मिश्रण जिसमें देवमूर्ति को स्नान कराया जाता है मुहा. चरणामृत पीना- पंचामृत लेना।

**चरणायुध** पुं. (तत्.) मुरगा, जो अपने पैरों के पंजों से लड़ता है।

**चरणाविंद** पुं. (तत्.) कमल के समान चरण, चरणकमल।

**चरणोदक** पुं. (तत्.) दे. 'चरणामृत'।

**चरणोपधान** पुं. (तत्.) पाँव रखने का स्थान, पाँव दान।

**चरता** स्त्री. (तत्.) 1. चलने का भाव 2. पृथ्वी।

**चरती** पुं. (देश.) व्रत न रखने वाला व्यक्ति।

**चरथ** वि. (तत्.) चलने वाला, जंगम पुं. 1. वह जो गतिशील हो 2. जीवन 3. मार्ग 4. गति।

**चरनदासी** स्त्री. (तद्.) जूता, पनही, चरणों की दासी।

**चरना** स.क्रि. (तद्.) पशुओं का घास आदि खाने के लिए खेतों और मैदानों में फिरना प्रयो. उस बड़े मैदान में गौएँ चर रही हैं अ.क्रि. (तद्.) घूमना फिरना, विचरना।

**चरनि** स्त्री. (तत्.) चाल, गति स्त्री. (देश.) 1. पशुओं के चरने का स्थान, चरी, चरागाह 2. वह नौद जिसमें पशुओं को खाने के लिए चारा दिया जाता है 3. पशुओं का आहार, घास, चारा आदि।

**चरपट** पुं. (तद्.) 1. चपत, तमाचा, थप्पड़ 2. किसी की वस्तु उठाकर भाग जाने वाला, उचक्का 3. एक प्रकार का छंद।

**चरपरा** वि. (अनु.) खाने में तीक्ष्ण, झालदार, तीता, चुस्त, फुर्तीला विशेष. नमक, मिर्च, खटाई आदि के संयोग से यह स्वाद उत्पन्न होता है।

**चरपराना** अ.क्रि. (देश.) घाव का चराना, घाव में खुशकी के कारण पीड़ा होना।

**चरपराहट** स्त्री. (देश.) 1. स्वाद की तीक्ष्णता, झाल 2. घाव आदि की जलन 3. द्वेष, डाह, ईर्ष्या।

**चरब** वि. (फा.) 1. तेज, तीखा 2. चरबीदार, चिकना, स्निग्ध।

**चरब जबान** वि. (फा.) 1. बहुभाषी 2. वाचाल 3. चापलूस 4. बिना सोचे समझे बोलने वाला।

**चरबदस्त** वि. (तत्.) 1. कुशल चालक 2. कारीगर।

**चरबन** पुं. (देश.) भुना हुआ अन्न, चबैना, दाना।

**चरबाँक** वि. (फा.) 1. चतुर, चालाक, होशियार 2. शोख, निर्भय, निडर, चंचल मुहा. चरबाँक दीदा- जिसकी दृष्टि चंचल हो।

**चरबा** पुं. (फा.) प्रतिमूर्ति, नकल, खाका मुहा. चरबा उतारना- नक्शा उतारना, किसी की नकल उतारना।

**चरबाई** स्त्री. (देश.) 1. चराने का काम 2. चराने की मजदूरी वि. (देश.) चरवाका।

**चरबी** स्त्री. (फा.) माँस के ऊपर और त्वचा के नीचे रहने वाला सफेद या पीले रंग का चिकना पदार्थ, वसा, मेद मुहा. चरबी चढना- मोटा होना।

**चरम** वि. (तत्.) अंतिम, हद दर्जे का, सबसे बड़ा हुआ, चोटी का, पराकाष्ठा पुं. (तत्.) 1. पश्चिम 2. अंत 3. चर्म।

**चरमर** पुं. (अनु.) चलने में जूते से या चारपाई पर बैठने से होने वाली आवाज प्रयो. उसके जूत खूब चरमर की आवाज करते हैं।

**चरमरा** वि. (अनु.) चरमर शब्द करने वाला।

**चरमराना** अ.क्रि. (देश.) चरमर आवाज होना।

**चरमोत्कर्ष** पुं. (तत्.) अत्यंत उन्नति, सर्वोपरि विकास प्रयो. प्राचीन काल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था।